

## अध्याय 13. दोहा-दशक

### (ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

#### अति लघूतरीय प्रश्न-

1. सज्जन की तुलना सोने से क्यों की गई है?

Ans:- क्योंकि सोना टूट-फूट जाने पर भी फिर से जुड़ जाता है, उसी प्रकार सज्जन व्यक्ति सौ बार टूटने पर भी पुनः संभल जाता है।

2. दुर्जन की तुलना घड़े से क्यों की गई है?

Ans:- क्योंकि घड़ा कुम्हार के एक ही ध्वके से कट जाता है, वैसे ही दुर्जन थोड़ी-सी चोट या बात से टूट जाता है।

3. बाँबी पर प्रहार करने वाले को कबीर ने बावला क्यों कहा है?

Ans:- क्योंकि वह मूर्ख साँप को मारने के बजाय बाँबी को तोड़ रहा है, जिससे कोई लाभ नहीं होता बाँबी किसी को नहीं डसती।

#### लघूतरीय प्रश्न-

1. सोना, सज्जन और साधुजन के विषय में कबीर ने क्या कहा है?

Ans:- कबीर कहते हैं कि सोना, सज्जन और साधुजन टूट कर भी बार-बार जुड़ जाते हैं वे विपरीत परिस्थितियों में भी बिखरते नहीं बल्कि और अधिक चमकते हैं।

2. कबीर के अनुसार किस प्रकार की बोली बोलनी चाहिए?

Ans:- ऐसी बोली जो “अमोल”, अर्थात् मूल्यवान हो—

जो हृदय की तौल कर, सोच-समझकर बाहर आए और किसी को दुःख न पहुँचाए।

3. कबीर ने गुरु की तुलना किससे की है?

Ans:- कबीर ने गुरु की तुलना कुम्हार से तथा शिष्य की तुलना घड़े (कुंभ) से की है।

4. कबीर ने मनुष्य जन्म कैसा बताया है?

Ans:- कबीर ने मनुष्य जन्म को दुर्लभ बताया है जो बार-बार नहीं मिलता, जैसे पेड़ का पत्ता झड़ने के बाद पुनः डाली में नहीं लगता।

#### दीर्घउत्तरीय प्रश्न-

1. ‘कबीर ने मन को मूँड़ने की बात क्यों कही है? मन के विषय-विकार कैसे दूर हों?

Ans:- कबीर कहते हैं कि लोग तो सिर के बाल अनेक बार मुंडाते हैं, परंतु मन के भीतर भरे विकारों—काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार—को नहीं हटाते।  
वे कहते हैं कि—

- बाहरी सफाई से कुछ नहीं होता,
- असली शुद्धि मन की है।

विकार दूर करने के उपाय (कबीर के अनुसार):

- सत्संग और सद्गुरु की शरण
- सत्य, प्रेम और करुणा का पालन
- सरल, संयमित जीवन
- अपने दोषों का चिंतन
- लोभ-मोह छोड़कर ईश्वर-स्मरण

इस प्रकार मन के विकार हटाकर ही मनुष्य सही मार्ग पर चलता है।

2. कबीर ने चक्की की उपयोगिता बताते हुए मूर्ति-पूजा का खंडन क्यों किया है?

Ans:- कबीर कहते हैं कि यदि पत्थर की पूजा करने से भगवान मिलते, तो वे पहाड़ की पूजा करते।  
परंतु भगवान पत्थर में नहीं मिलते इसलिए वे निरर्थक मूर्ति-पूजा का विरोध करते हैं।

वे आगे कहते हैं कि पत्थर में बनी चक्की अधिक उपयोगी है, क्योंकि—

- चक्की संसार का पेट भरती है,
- अनाज पीसकर लोगों को भोजन देती है,
- जीवन में वास्तविक उपयोगिता रखती है।

कबीर का उद्देश्य यह बताना है कि—

- अंधविधास से दूर रहो,
- कर्म करो,
- ईश्वर को बाहरी पूजा नहीं,
- भक्ति, सेवा और सत्य से पाया जा सकता है।